जीवन विज्ञान सन्दर्भ षिक्षक प्रषिक्षण षिविर आज से

शिक्षा के साथ भावात्मक विकास करना चाहिए

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 21 अप्रैल।

भारतीय चिंतन में सर्वमान्य रहा है कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है शेष जितने प्राणी है उनमें समग्रता नहीं है। भालू, शेर में शक्ति बहुत है किंतु ज्ञान नहीं है, मस्तिष्क विकसित नहीं होता। समग्रता नहीं, मनुष्य में एक समग्रता है उसके पास शक्ति है, बौद्धिकता है और भावधारा है। मनुष्य में तीन शक्तियां है उनका विकास करने के लिए शिक्षा आवश्यक है। जो मनुष्य के पास शक्ति नकारात्मक है उनको कैसे सकारात्मक बनाया जाए, इसलिए शिक्षा का विकास हुआ। शिक्षा का उद्देश्य है उसे अपनी शक्तियों से परिचित कराया जाए। उन शक्तियों का उपयोग कैसे करना उसका प्रशिक्षण दिया जाए। जीवन को चलाने के लिए पदार्थ की जरूरत होती है और धन की जरूरत होती है शिक्षा का एक उद्देश्य पूरा हो रहा है धन का अर्जन कैसे हो यह भी ज्ञान कराया जाता है। किंतु दूसरा जीवन का पक्ष है व्यवहार पक्ष। एक से दो आदमी साथ में रहते हैं वहां व्यवहार अच्छा हो। व्यवहार नीति नैतिकता दोनों आवश्यक है।

उक्त विचार आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में 21 से 26 अप्रैल तक चलने वाले छह दिवसीय 'जीवन विज्ञान सन्दर्भ शिक्षक प्रशिक्षण शिविर' व धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाये।

आचार्यश्री ने फरमाया कि आज के इस भौतिकता के युग में व्यक्ति तनाव मुक्त नहीं है। अपने इमोशन पर नियंत्रण नहीं है इसलिए वह स्वयं सुखी नहीं है और अपने परिवार को सुखी नहीं रख सकता। और न्याय भी सही नहीं कर सकता एक समाज के लिए जरूरी है सामाजिक न्याय। दूसरे मस्तिष्क का विकास होना चाहिए। मनुष्य के मस्तिष्क की कई परते हैं, उनमें एक है 'एनिमल ब्रेन', पशु मस्तिष्क मनुष्य है इसलिए वह पशु की तरह आचरण करता है एनिमल ब्रेन उसका परिष्कार नहीं किया गया। अपराध की वृत्ति उसके कारण होती है। दूसरी समस्या है कि मनुष्य का जो बायां पटल है उससे भाषा का ज्ञान, भौतिक विकास बहुत अच्छा हो सकता है।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि शिक्षा के साथ भावात्मक विकास होना चाहिए। उसके लिए जीवन विज्ञान की प्रक्रिया आवश्यक है। जो विद्यार्थी स्कूल में पढता है, तो उसमें भावात्मक विकास ही ज्यादा काम में आता है। बौद्धिक विकास पढने के लिए होता है, अगर विज्ञान का विद्यार्थी है तो केवल पढाई से काम नहीं चलेगा उसके साथ व्यक्तिगत शिक्षा में प्रायोगिक होना चाहिए। एक व्यक्ति बहुत ज्यादा क्रोध है, लोभ का आवेश है कि अपने भाई की भी हत्या कर देता है। जीवन विज्ञान एक भावात्मक विकास की प्रक्रिया है जिसके द्वारा मस्तिष्कीय परिवर्तन कर सकते हैं और अच्छा जीवन जी सकते हैं।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि एक विद्यार्थी को दुष्टता की ओर नहीं जाना चाहिए उसे विनम्रता की ओर जाना चाहिए। सरकार की ओर से विद्यार्थियों को शिक्षा व भोजन भी दिया जाता है। शिक्षा के माध्यम से विकास भी हो रहा है। गांवों में बच्चे पढ़ते हैं बौद्धिकता का विकास होता है मैं बुद्धि को महत्त्व देता हूं। बुद्धि को उपयोगी मानता हूं। बुद्धि है समझ है तो

व्यक्ति कुछ कर पाएगा। ज्ञान का विकास किया भी जा रहा है किंतु वह एक आयाम है माता–पिता, अभिभावक बच्चों का शिक्षा संस्थान में भेजने का उद्देश्य है कि उनका बच्चा ज्ञानवान, आत्मनिर्भर, और सदाचारी बने। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार होने चाहिए। नाम चाहे कुछ भी हो काम अच्छा होना चाहिए, क्योंकि देश का भविष्य, समाज का भविष्य बालपीढी पर है। बच्चे देश के कर्णधार बन सकेंगे। इसलिए बालपीढी पर ध्यान देना अपेक्षित है।

युवाचार्यप्रवर ने यह भी फरमाया निडरता के साथ बच्चों में नम्रता व नैतिकता की बातें आती है तो जीवन विज्ञान की परिपूर्णता हो सकती है।

प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने फरमाया कि कर्णाटक जीवन विज्ञान शिक्षा विभाग ने जो निर्णय लिया है वह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। जीवन विज्ञान जीने की कला है जिसके द्वारा व्यक्ति सुखी व शांत जीवन जी सकता है। क्योंकि प्रयोग के बिना व्यक्ति अपना परिवर्तन नहीं कर सकता। जीवन विज्ञान के प्रयोग से केवल कर्नाटक का ही नहीं अपितु भारतीय जनता में परिवर्तन होगा।

इस अवसर पर एस रघुनाथन, सुन्दरलाल माथुर ने अपने विचा व्यक्ति किये।
कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी की ओर से अभीचन्द ने आचार्य महाप्रज्ञ को जीवन विज्ञान की किट भेंट की।

इस अवसर पर प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल सेखानी, मंत्री कन्हैयालाल गिड़िया ने आए हुए शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

मध्याह्न में शारीरिक स्वास्थ्य पर जे.पी.एन मिश्रा ने व्याख्यान दिया।

ज्ञान ज्योति उच्च माधमिक विद्यालय दड़िबा में आयोजित विशेष कार्यक्रम

बीदासर, 21 अप्रैल।

ज्ञान और आचार दो भिन्न बाते हैं आज ज्ञान का विकास तो हो रहा है और उसे मनुष्य का बौद्धिक विकास भी हो रहा है। पर उसका आचार पक्ष मजबूत नहीं हो रहा है। उससे सारी व्यवस्थाएं बिगड़ रही है ये विचार अणुव्रत प्राध्यापक मुनिश्री सुखलालजी ने ज्ञान ज्योति उच्च माधमिक विद्यालय दड़िबा में आयोजित विशेष कार्यक्रम में प्रवचन देते हुए व्यक्त किये।

मुनिश्री ने कहा कि कोई जमाना था जब शिक्षा बहुत कम लोगों के लिए प्राप्त होती थी पर गरीब से गरीब आदमी भी यह चाहता है कि मेरे बच्चे का भविष्य उज्जवल हो इसलिए सरकारी विद्यालयों के साथ–साथ निजी विद्यालयों की भी आज बाढ आ रही है पर यदि शिक्षा के साथ भाव पक्ष को मजबूत नहीं बनाया गया तो शिक्षा का सारा तंत्र विघटित हो जायेगा। जीवन विज्ञान मनुष्य के भाव तंत्र को मजबूत करने की बात करता है। इस अवसर पर मुनि मदनकुमार ने प्रेक्षाध्यान महाप्राण ध्वनि, नशामुक्ति आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। चुरू जिला अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चौथमल बोथरा, संस्थाप्रधान नवलकिशोर मीणा ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। विद्यालय के छात्रों ने अणुव्रत गीत का सस्वर संगान किया। एडवोकेट दिनदयाल, सांवरमल छापोला, सुभाषचन्द्र, राजकुमार सैनी, धर्मेन्द्रकुमार मीणा, मुकेश कुमार मीणा, सुधा गौड़ भी उपस्थित थे।

– अशोक सियोल